

SHRI PURUSHOTTAM UPADHYAY

Shri Purushottam Upadhyay is a composite performer who has single handedly rewritten the history of Gujrati Sugam Sangeet. His intense sensitivity to every nuance and note can magically transform even the simplest poetry and song into an immortal classic. He does not merely sing, he breathes and infuses life into the melody.

2. A self taught child prodigy, Shri Upadhyay has been performing ever since the tender age of 6 continuing to enthrall audiences leaving them spellbound even today at the age of 82. The influence of the famous classical artists Salamat Ali and Nazakat Ali Khan, with whom he was in close association, made his style of singing unique to the genre. Shri Upadhyay has been largely responsible for creating and promoting Gujrati Sugam Sangeet and has composed and popularized innumerable songs, bhajans, gazals and garbas all across the globe. He has been a music director for a few Gujrati Films as well as Gujrati plays along with being a performing artist on Television and All India Radio. He has been the pioneer in taking Gujrati Sugam Sangeet to countries such as Africa, Australia, UK and USA in the 60's while performing over 8,000 shows and continues to do so.

3. Among the numerous awards that Shri Upadhyay received, the notable ones are Gujrat Gaurav Award by the Government of Gujarat, Vishwa Gurjari Award, Rahabar Award for South Asian Music - Toronto, Kala Gurjari Award, National Achievement Award, Brihad Mumbai Gujrati Samaj Award, Vividhotsavam Award by Ahmedabad Municipal Corporation, Naagar Ratna Award - Gandhinagar, Binani Big Gujrati Award and Girnar Award. In 1957, Ms. Lata Mangeshkar sang her first Gujrati song composed by Shri Upadhyay. Many other eminent artists like Begum Akhtar, Mohammed Rafi Saheb, Mukesh, Manna Dey, Laxmi Shankar, Asha Bhosle, Suman Kalyanpur, Bhupinder Singh, Jagjit Singh, Pankaj Udhas, Anup Jalota and many more have sung under his baton.

4. Even today Shri Upadhyay performs, composes and teaches music and gives an opportunity to young upcoming talented artists by giving them a stage to perform.



श्री पुरूषोत्तम उपाध्याय

श्री पुरूषोत्तम उपाध्याय एक ऐसे बहुआयामी अभिनयकार हैं जिन्होंने अकेले ही गुजराती सुगम संगीत के इतिहास को फिर से जीवन्त कर दिया। अपनी कविता की प्रत्येक अर्धछटा और नोट के प्रति आपकी गहन संवेदना से एक साधारण कविता और गीत भी चमत्कारिक तौर पर अमर शास्त्रीय संगीत का रूप ले सकता है। आप केवल गायन ही नहीं करते अपितु राग और स्वर लहरी आपकी सांसों और जीवन में भी रच-बस गया है।

2. बाल प्रतिभा संपन्न श्री उपाध्याय ने अपने आप ही संगीत को सीख लिया तथा अपनी 6 वर्ष की बाल अवस्था से ही आप गायन करने लगे हैं और आपने अपनी रागिनी से निरंतर श्रोताओं को वशीभूत कर लिया है और आज 82 वर्ष की आयु में भी आप उन्हें मंत्रमुग्ध सा कर देते हैं। प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत कलाकार सलामत अली और नजाकत अली खान, जिनके साथ आपका घनिष्ठ जुड़ाव रहा, के प्रभाव ने आपकी गायन शैली को अनूठी शैली का रूप दिया। आपको बहुत हद तक गुजराती सुगम संगीत के सृजन एवं संवर्धन का श्रेय जाता है और आपने पूरे विश्व में असंख्य गीतों, भजनों, गजलों और गरबा की रचना की और उन्हें लोकप्रिय बनाया। आप कुछेक गुजराती फिल्मों और गुजराती नाटकों के संगीत निर्देशक रहे हैं और आप दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो पर भी अपनी कला का प्रदर्शन करते रहे हैं। आप 8000 से अधिक रंगमंचों में कार्य करते हुए गुजराती संगीत को अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, यू.के. और यू एस ए जैसे देशों में पहुंचाने के भी पुरोधा रहे हैं और यह कार्य आप आज भी करते आ रहे हैं।

3. आपको अनेक पुरस्कारों से गौरवान्वित किया गया जिनमें से गुजरात सरकार द्वारा गुजरात गौरव पुरस्कार, विश्व गुजराती अवार्ड, साउथ एशियन म्यूजिक-टोरोन्टो के लिए रहबर अवार्ड, कला गुर्जरी अवार्ड, नेशनल एचीवमेंट अवार्ड, वृहत मुम्बई गुजराती समाज अवार्ड, अहमदाबाद नगर निगम द्वारा विविधोत्सव अवार्ड, नागर रत्न अवार्ड- गांधीनगर, बिनानी बिग गुजराती अवार्ड और गिरनार अवार्ड आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। वर्ष 1959 में, आपके द्वारा रचित आपके पहले गुजराती गीत को सुश्री लता मंगेशकर जी ने गाया था। इनके सानिध्य में बेगम अख्तर, मोहम्मद रफी साहब, मुकेश, मन्ना डे, लक्ष्मी शंकर, आशा भोसले, सुमन कल्याणपुर, भूपिन्दर सिंह, जगजीत सिंह, पंकज उधास, अनूप जलोटा और बहत सारे अन्य प्रख्यात कलाकारों ने गीता गाया है।

4. आज भी, आप अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, और संगीत प्रेमियों को संगीत सिखाते हैं तथा कलासम्पन्न उभरते युवा कलाकारों को स्टेज पर प्रदर्शन करने का अवसर प्रदान करते हैं।